नवीकरणीय ऊर्जा में चीन के बढ़ते कदम

अच्छी खबर यह है कि चीन ने पवन और सौर ऊर्जा के क्षेत्र में तेज़ी से कदम बढ़ाए हैं और वर्ष 2015 में उसके कुल ऊर्जा उत्पादन में पवन व सौर ऊर्जा के योगदान में 2014 के मुकाबले रिकॉर्ड वृद्धि (क्रमशः 34 व 74 प्रतिशत) हुई है।

वैसे तो आज भी चीन के ऊर्जा उत्पादन में कोयले का योगदान सर्वाधिक (करीब दो-तिहाई) है मगर पिछले वर्ष चीन की कोयला खपत में 3.7 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई और उसका कोयला आयात 30 प्रतिशत कम हुआ। कोयला सर्वाधिक प्रदूषक जीवाश्म ईंधन माना जाता है।

उपरोक्त आंकड़ों को देखते हुए माना जा रहा है कि चीन कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन के लिए निर्धारित लक्ष्य की न सिर्फ पूर्ति कर लेगा बल्कि वर्ष 2020 से काफी पहले कर लेगा और उस लक्ष्य से भी कहीं आगे निकल जाएगा। गौरतलब है कि कार्बन डाईऑक्साइड एक ग्रीनहाउस गैस है जो धरती के तापमान को बढ़ाने में योगदान देती है। चूंकि चीन दुनिया के कुल कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन में से एक-तिहाई पैदा करता है, इसलिए चीन द्वारा अपने उत्सर्जन में इस तरह की कमी का विश्व जलवायु पर असर भी उसी अनुपात में उल्लेखनीय होगा।

वर्ष 2015 में चीन में कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता 32.5 गिगावॉट थी। दुनिया का कोई देश इसके निकट भी नहीं पहुंचा है। वर्ष 2014 में वहां 20.7 गिगावॉट पवन ऊर्जा क्षमता स्थापित की गई। ताज़ा आंकड़े दर्शाते हैं कि चीन में 'स्वच्छ' ऊर्जा (यानी पनबिजली, पवन, सौर, परमाणु और प्राकृतिक गैस से उत्पन्न ऊर्जा) कुल ऊर्जा में से 18 प्रतिशत है जो 2011 के मुकाबले 13 प्रतिशत अधिक है।

विशेषज्ञों का कहना है कि आज वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों से ऊर्जा उत्पादन कीमतों के मामले में गैस व कोयला आधारित उत्पादन की टक्कर में आता जा रहा है। इसलिए अब नवीकरणीय ऊर्जा की ओर कदम बढ़ाना आर्थिक दृष्टि से भी व्यावहारिक हो चला है।

चीन के अधिकृत सूत्रों का कहना है कि 2020 के लिए लक्ष्य यह था कि प्रति इकाई सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) पर कार्बन डाईऑक्साइड उत्सर्जन को 2005 के स्तर से 40-45 प्रतिशत तक कम किया जाएगा। चीन संभवतः इस लक्ष्य से कहीं आगे निकल जाएगा। वैसे इस माह चीन की पंचवर्षीय योजना की घोषणा की जाएगी और सबकी निगाहें इस पर टिकी हैं कि ऊर्जा के मामले में और किन कदमों की घोषणा की जाती है। ***(स्रोत फीचर्स)***